

## I लघु प्रश्न / उत्तर :-

1. लेखक के पिता जी फार्मूला क्या था ?  
उ० "गरमी खावे अपने को, नरमी खावे गैर को" ये मेरे पिता जी का फार्मूला था। वह यह समझते थे कि जब हम क्रोध करते, गुस्सा करते हैं तो हमारा चरित्र खत्म हो जाता है। अनुचित और <sup>असुख</sup> ~~असुख~~ <sup>असुख</sup> ~~असुख~~ में हम उत्तर नहीं स्पष्ट कर पाते हैं और वह हमें खत्म कर देती है। परन्तु अगर कोई गुस्सा कर रहा है और हम उसे क्रोध से भरा उत्तर दे कर विनम्रता और शान्ति से जवाब दे रहे हैं तो उसे और गुस्सा आसक्त और वह अपना तापमान खो बैठेगा। अर्थात् हमें हमेशा यह समझ रखना चाहिए कि जब हमसे बड़ी बुरी तरह से बात कर रहा है तो हमें उसके साथ बड़ी ही विनम्रता से बात करनी चाहिए।

2. चौधरी के पाँच-सात गरम वाक्य सुनकर लेखक के पिता जी ने चौधरी से क्या कहा ?  
उ० चौधरी के पाँच-सात गरम वाक्य सुनकर लेखक के पिता जी ने चौधरी से <sup>यह</sup> ~~यह~~ कहा कि "बली भाई, बाँय के कुर्से पर चले।"

3. लेखक के पिता जी की किस बात को सुनकर चौधरी की गरमी उसके पेट में चली गई।

30 लेखक के पिता जी ने कहा कि " फिर क्या, तुम्हारा जी बस समय लड़ने को कर रहा है और मैं हो गया हूँ बूढ़ा, तो, इबादीम मिल जायगा या तोता पहलवान, उनसे तुम्हारा जोड़ बँधवा दूँगा। बस, तुम्हारी तसल्ली हो जायगी और मेरा पीछा छूट जायगा।" यह सुनते ही उन्हें हँसी आ गई और हँसते ही लेखक के पिता जी चाय का गिलास उनके आगे किया। चाय के गरमी में मिल, उनकी गरमी उनके ही पेट में चली गई।

4. लेखक की माँ जब बहुत तेज बीलती थीं तो लेखक के पिता जी क्या कहकर उन गरम लपटों को मुस्कान में बदल देते थे?

30 मैं लेखक की माँ का स्वभाव गरम था। कभी वे बहुत तेज हो उठतीं तो पिता जी हँसकर कहते, " अच्छा शूर्पनखा की झाँकी फिर <sup>लेखक के</sup> सजा लेना, इस समय तो काम की बात कर।" उनके कहने का ढंग ऐसा होता कि लपटें मुस्कान में बदल जातीं।

5. संस्कृत पाठशाला के एक विद्यार्थी की अजीब हँसी क्या थी?

30 संस्कृत पाठशाला के एक विद्यार्थी की अजीब हँसी यह थी कि वह सबकी गालियों की चर्चियाँ लिखा करता और उसके बदले में जब दूसरे भी लिखकर या जबानी गालियाँ देते तो वह खूब हँसता। दूसरों की गालियों में हँस लेता और उन्हें अपनी सफलता मानता।



## दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. संस्कृत पाठशाला में शरास्त्री छात्र ने लेखक को पत्र में क्या लिखा था? लेखक ने उसके जवाब में क्या लिखा और उसका शरास्त्री छात्र पर क्या प्रभाव पड़ा?

उ० संस्कृत पाठशाला में शरास्त्री छात्र ने लेखक को पत्र में लिखा था कि "मेरी कानी जोर के आई साइब - दूसरे शब्दों में - मेरे चार साल ग्राम जी, क्या आपके पास एक नया निब है?" पत्र पढ़कर लेखक का जी झुन गया, पर तभी लेखक को अपने पिता जी के बोल याद आ गये। तुरंत लेखक ने एक पत्र के साथ नया निब उसे भेज दिया। पत्र में लेखक ने लिखा था - "प्रिय भाई, आपका पत्र पढ़कर खूब हँसी आयी। तुम तो बीरबल के अवतार मालूम होते हो। निब भेज रहा हूँ।" यह पत्र और निब उसके लिए एक नया अनुभव था। शाम को वह लेखक से मिला और उससे लिपट गया। उसने माफी भी माँगी। बाद में उसने मुझे कभी ऐसा पत्र नहीं लिखा और धीरे-धीरे उसने यह आवत भी छोड़ दी।

2. गांधी जार्ज पंचम की दावत में क्यों गए, जबकि वे इस तरह की शानदार दावतों में कभी शरीक नहीं होते थे?

उ० गांधी जी इस तरह की शानदार दावतों में कभी शरीक नहीं होते थे, इसलिए सत्य और न्याय का पक्ष था कि वे साफ-साफ इंकार कर दें, पर सोचते-सोचते



रुक नीति का पक्ष उनके मन में आया कि मैं इंग्लैंड का मेहमान हूँ और मेहमान को कोई भी ऐसा काम न करना चाहिए कि उसके व्यवहार से मेजबान के प्रति अवज्ञा प्रकट हो और बस, उन्होंने अपने नियम को ढीला करके निमंत्रण - पत्र के उत्तर में स्वीकृति - पत्र लिख दिया।

3. गांधी जी बहुत सचेत - विचारकर गरम पत्रों के गरम जवाब दिया करते थे।" पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए।
- उ० गांधी जी के पास अनेक गरम पत्र आते थे। क्योंकि हमारा देश अंग्रेजों के हाथों में था, जिसके कारण वह हमारे देश के उच्च पदों पर आसीन नेताओं को धमकियों भरे गरम खत लिखते थे। इन पत्रों का जवाब वाणी का हो या कलंक का वह जितना ठंडा हो उतना ही प्रभावशाली होगा जैसे की दावत का प्रसंग आने पर भी उन्होंने नीतिक पक्ष पाठ पर विचार किया तो तुरंत स्वीकृति पत्र भेज दिया। जब उनकी 'बा' की मृत्यु हो गयी तब भी उन्होंने पत्रों के अनेकों बार अनेक लोगों से काट-छाँट के ही हाक में भेजा। वजयसराय को भी भेजी जाने वाले पत्र में भी भेजने समय उन्हें यह बात समझ आई कि वह अगर गरम पत्र भेज देते तो सारे लोग उनकी हँसी उड़ाते। अर्थात् गुस्से के समय पत्र नहीं लिखना चाहिए ऐसा ही गांधी जी ने कहा है।

4. गांधी जी आगा खां महल में कब नजरबंद थे?  
 उ० गांधी जी आगा खां महल में 1944 ई० में नजरबंद थे।

5. क्रोध से सोचने - समझने की शक्ति समाप्त होती है या बढ़ती है?

उ० क्रोध से सोचने समझने की शक्ति समाप्त होती है।  
 क्रोध के बारे में सभी धर्म - शास्त्रों के ग्रंथों में वर्णन मिलता है कि यह मनुष्य का बहुत खतरनाक शत्रु है इससे हमारी शक्ति धीरे - धीरे समाप्त हो जाती है। क्रोध के समय हमेशा शरीर की सभी मांसपेशियाँ उत्तेजित हो जाती हैं हमारे शरीर में विषैला रक्त पैदा हो जाता है यह विष धीरे - धीरे व्यक्ति के शरीर में रोग उत्पन्न करता है यह तक की जो व्यक्ति सबसे ज्यादा क्रोध करता है उसका मानसिक संतुलन खराब हो जाता है और उसकी मृत्यु तक हो जाती है।